# अमिता दुबे की कहानियों में व्यक्त संवेदना एवं शिल्प के स्वरूप का अध्ययन

हिन्दी विषय में पी-एच. डी. उपाधि की आंशिक पूर्ति हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध की

प्रस्तावित रूपरेखा


शोध छात्रा

**इति शिवहरे**

शोध निर्देशिका

**प्रो. शर्मिला सक्सेना**

**हिन्दी विभाग, कला संकाय**

**दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी)**

**दयालबाग, आगरा - 282005**


**2025**

## अमिता दुबे की कहानियों में व्यक्त संवेदना एवं शिल्प के स्वरूप का अध्ययन

### शोध परिचय :

साहित्य और समाज का अन्योन्याश्रित सम्बंध है। साहित्य, जीवन का वह अभिन्न अंग है, जो हमें समाज की विविध परिस्थितियों से अवगत कराता है। समाज में साहित्य को कई प्रकार से परिभाषित किया गया है। कतिपय विद्वान "सहित्यस्य भाव: इति साहित्य:" को परिभाषित करते हैं, तो कुछ विद्वान "हितेन सहितम्" को स्वीकार करते हैं। यदि देखा जाए तो दोनों ही परिभाषाएँ मुझे पूर्ण प्रतीत नहीं होती हैं। मेरा मानना है कि जहाँ साहित्य में सहित का भाव होता है, वहीं हित साधना का भी भाव होता है।

साहित्यकार, साहित्य में अच्छी और बुरी सभी प्रकार की घटनाएँ अपने विवेक के अनुसार स्पष्ट करत ा है। यदि साहित्य, दूसरे की हित-साधना के लिए लिखा जाएगा तो वह उपदेशपरक हो जाएगा। मेरी दृष्टि में अच्छा साहित्यकार वह है, जो समाज की तमाम बुराइयों और विसंगतियों को अपनी लेखनी का आधार बनाकर इस रूप में व्यक्त करे कि पाठक उसे रुचिपूर्वक पढ़े और उसमें छिपे हुए मर्म से शिक्षित हो।
सुप्रसिद्ध कथाकार अमिता दुबे एक ऐसी ही साहित्यकार हैं, जिनके साहित्य पर कार्य करना मेरा सौभाग्य होगा। आपने न केवल विसंगतियों के प्रति अपनी आवाज उठाई है, बल्कि उसका समाधान भी प्रस्तुत किया है। यदि आपकी कहानियों को भली-भाँति पढ़ा और समझा जाए तो यह अज्ञानता रूपी तिमिर को हटाने वाला, समाज को उद्बोधित करने वाला साहित्य होगा। आपकी व्याप्ति प्रबुद्ध साहित्यकारों तक ही नहीं अपितु सामान्य पाठक तक भी है, जिसके माध्यम से व्यक्ति के जीवन का वह मार्मिक एवं महत्त्वपूर्ण पक्ष उद्घाटित किया जाता है, जो व्यक्तिगत न रहकर, समष्टिगत चेतना प्रदान करता है। आप लब्ध, प्रतिष्ठ हैं। समाज में स्वयं स्थापित हैं। आपने बहुत ही कम समय में कथा साहित्य के क्षेत्र में जो ख्याति अर्जित की है, वह श्लाघनीय है।

संवेदना के चरमोत्कर्ष पर पहुँचकर आपने पाषाणी, नयनदीप, सिलवटें, सुखमनी, सीढ़ी, आदि कहानी संग्रह के

माध्यम से ऐसे पात्र गढ़े हैं, जो समाज में व्याप्त विसंगतियों के द्योतक हैं। आपकी कहानियाँ मानवीय संवेदना, मूल्यहीनता एवं गिरते आदर्श का ढांचा हैं। आपने जिन समस्याओं को उठाया है, सांकेतिक रूप में उसका समाधान भी वहीं प्रस्तुत किया है। आपकी कहानियों के पात्र "वसुधैव कुटुम्बकम्" जैसी उक्तियों को अपने जीवन में उतारकर ग्लोबलाइज़ेशन की दौड़ में आगे बढ़ रहे हैं। आपका प्रयास ये है कि पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव सिर्फ इतना ही पड़े, जिससे कि हमारी सांस्कृतिक जड़ें न हिलें। अपनी कहानियों के माध्यम से आपने साहित्य जगत में अपना लोहा तो मनवाया ही है, इसके अतिरिक्त अन्य विधाओं पर भी अपनी लेखनी चलाई है - समालोचना, बाल साहित्य, उपन्यास, काव्य, समीक्षा, संपादन आदि।

अनेक विद्वानों ने आपके साहित्य की सराहना की है। आपके साहित्य के विषय में सुप्रसिद्ध लेखक महेंद्र भीष्म की उक्ति इस प्रकार है कि - "उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान में सम्पादक जैसे महत्वपूर्ण पद पर कुशलतापूर्वक कार्य करते हुए एवं पारवारिक दायित्वों के निर्वहन के बाद जिस तरह से डॉ. अमिता दुबे ने हिंदी साहित्य जगत में अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाया है वह नव रचनाकारों के लिए अनुकरणीय व स्तुत्य है। विभिन्न विधाओं पर लिख रहीं अमिता जी अपनी विनम्रता और उदारता के लिए जानी जाती हैं। मंच संचालन की कुशलता उनमें भरपूर है। अनेक मौकों में आपके द्वारा विषम स्थितियों को अपनी वाक्पटुता, धैर्य और अपने साहित्यिक व्यक्तित्व से कुशलता से संभाला गया है। अर्द्धशतक की ओर बढ़ रहीं आपकी साहित्यिक कृतियों की संख्या में सभी कृतियाँ अपना विशिष्ट स्थान रखती हैं।"

आपके द्वारा रचित कहानी संग्रह 'सुखमनी' का श्रीमती 'सुनीता पाटिल' द्वारा मराठी में अनुवाद किया जा चुका है, इसके अतिरिक्त 'माँ हो जाना', 'यादें पिता की' कविता संग्रह का 'यशपाल निर्मल' द्वारा डोगरी में अनुवाद हो चुका है।

आपको साहित्य के क्षेत्र में अब तक सौ से भी अधिक सम्मान प्राप्त हो चुके हैं। इतने अधिक सम्मान प्राप्त करना सामान्य साहित्यकार के लिए संभव नहीं है। यद्यपि आप सम्मान के लिए नहीं बल्कि स्वानुभूति को अभिव्यक्त करने के लिए साहित्य सर्जना करती हैं, जो कालांतर में लोकहित में परिणत हो जाती है।

आपके कहानी संग्रह 'पुनर्वास' को 'डॉ० सरोजिनी कुलश्रेष्ठ कथाकृति सम्मान 2014', 'सुखमनी' को 'गजानन माधव मुक्तिबोध सम्मान-2018' में प्राप्त हुआ है। इसके अतिरिक्त 'दीपक सा मन' समालोचना को 'राष्ट्रधर्म गौरव सम्मान - 2016', कविता संग्रह 'ऐसा मन करता है' को 'नीरज सम्मान-2018' एवं उपन्यास 'एकांतवासी शत्रुघ्न' को 'शिक्षाविद् पृथ्वीनाथ भान साहित्य सम्मान - 2021' प्राप्त हुआ है।

इसके अतिरिक्त आपको साहित्य के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान देने के लिए **राष्ट्रीय, राजकीय, एवं क्षेत्रीय सम्मान** दिए गये हैं, जो इस प्रकार हैं-

दिल्ली प्रेस द्वारा तत्कालीन महामहिम राज्यपाल विष्णुकांत शास्त्री की उपस्थिति में (2003), पं प्रताप नारायण मिश्र युवा कथाकार सम्मान (2007), ग्वालियर साहित्य परिषद द्वारा शब्द माधुरी व शब्द भारती सम्मान (2007), साहित्येन्दु सम्मान (2008), अद्यशती सम्मान (2009), रेवान्त सम्मान (2011), लमही महोत्सव सम्मान (2012), केशवचन्द्र मिश्र स्मृति वाग्देवी साहित्य श्री सम्मान (2012), अखिल भारतीय डाॅ. कुमुद टिक्कू स्मृति पुरस्कार (2012), सुन्दरम् भूषण सम्मान (2013), महादेवी वर्मा सम्मान (2014), शब्द निष्ठा सम्मान (2015), भारती शिखर सम्मान (2015), हिन्दी रत्नाकर सम्मान (2016), समाज शिरोमणि सम्मान (2016), रेयान अस्मिता सम्मान (2017), काव्य भूषण सम्मान (2017), गीतिका गौरव सम्मान (2018), डॉ. महाश्वेता चतुर्वेदी स्मृति सम्मान (2019), आखर-आखर सम्मान (2020), श्रीमती गेंदारानी अवस्थी साहित्य सम्मान (2021), वागीश्वरी सम्मान (2022), कर्मवीर चक्र सम्मान (2022), सजग प्रहरी सम्मान (2023), राष्ट्र रत्न सम्मान (2023), वाराही इंद्रधनुष सम्मान (2023) सहित 100 से भी अधिक सम्मान प्राप्त हुए हैं।

**प्रस्तुत शोध विषय की प्रेरणा एवं चयन :**

पठन-पाठन, अध्ययन-अध्यापन, साहित्य से जुड़े व्यक्ति की सहज प्रवृत्ति होती है। इसी प्रवृत्ति के फलस्वरूप साहित्य एवं समाज में उच्च कोटि के शोध कार्यों एवं तकनीकी विकास को बढ़ावा मिला है। प्रस्तुत शोध विषय के चयन की

प्रेरणा मुझे हिन्दी कहानियों के अध्ययन से प्राप्त हुई है। अमिता दुबे, हिन्दी कहानीकार के रूप में अपना विशिष्ट स्थान रखती हैं। आपकी कहानियों ने हृदय-पटल पर ऐसी छाप छोड़ी है कि मैंने "अमिता दुबे की कहानियों में व्यक्त संवेदना एवं शिल्प के स्वरूप का अध्ययन" विषय को अपने शोध का विषय बनाने का निश्चय किया। प्रस्तुत शोध विषय के चयन एवं रूपरेखा के निर्माण में मेरी शोध निर्देशिका प्रो० शर्मिला सक्सेना ने मेरा मार्गदर्शन किया है। तदुपरांत मैंने शोध विषय से संबंधित सामग्री के संकलन हेतु निम्नलिखित विश्वविद्यालयों में जाकर अध्ययन किया है-

1. केंद्रीय पुस्तकालय, दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी) दयालबाग़, आगरा।
2. केंद्रीय पुस्तकालय, केंद्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा।

इसके अतिरिक्त मैंने शोध सामग्री का चयन बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय, इलाहाबाद विश्वविद्यालय एवं विभिन्न ऑनलाइन वेबसाइट से किया है।

**प्रस्तुत शोध विषय का उद्देश्य :**

प्रस्तुत शोध विषय का उद्देश्य मन की जिज्ञासा को तुष्ट करके, ज्ञान भंडार को विकसित करने के साथ ही, सामाजिक विद्रूपता, आडंबर, जीवन के प्रति अनास्था, असंवेदनशीलता, अनैतिकता, विघटन आदि के बीच सामंजस्य स्थापित करके संस्कृति की प्रतिष्ठापना का संकल्प करना है। इस अनुसंधान के माध्यम से उदात्त मूल्यों का प्रसार एवं मानव मन की संवेदनाओं को उजागर करने का प्रयत्न किया जाएगा।

**प्रस्तुत शोध विषय का महत्त्व :**

कहानियाँ संवेदनशील प्राणी के अंतःकरण का स्पंदन हैं, जो सर्वसाधारण को अपनी ओर आकर्षित करके मानव मन की भावनाओं पर अवलंबित रहती हैं। प्रस्तुत शोध विषय के अन्तर्गत 'अमिता दुबे की कहानियों में व्यक्त संवेदना एवं शिल्प के स्वरूप का अध्ययन' को लिया गया है। भारतीय मूल्य, नैतिकता और संस्कृति का संरक्षण आपके साहित्य को महत्त्वपूर्ण बनाता है। आपका साहित्य हमें संपूर्ण विश्व से जोड़ता है। लेखिका उन पाश्चात्य मूल्यों की प्रशंसक हैं, जो

किंचित बदलाव के साथ भारतीय मूल्यों के उत्थान में अपना योगदान देते हैं।

**अनुसंधान पद्धति :**

अनुसंधान एक अनवरत चलने वाली प्रकिया है, जो मानव में जन्म से ही विद्यमान रहती है एवं जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में क्रियाशील होती है। प्रस्तावित शोध प्रबंध की शोध पद्धति वर्णनात्मक, विवेचनात्मक एवं विश्लेषणात्मक रहेगी। परन्तु आवश्यकतानुसार तुलनात्मक एवं समाजशास्त्रीय शोध पद्धति का प्रयोग भी संभावित रूप से किया जाएगा। अंत में सम्पूर्ण शोध कार्य का निष्कर्ष दिया जाएगा।

**शोध विषय से पूर्व हुआ कार्य :**

किसी शोध विषय के चयन से पूर्व यह ध्यान रखना अति आवश्यक होता है कि चयनित शोध विषय पर पूर्व में कितना कार्य हो चुका है। विभिन्न ई-पुस्तकालयों और पुस्तकालयों में अध्ययन करने के उपरांत यह ज्ञात हुआ है कि मेरे द्वारा चयनित विषय “अमिता दुबे की कहानियों में व्यक्त संवेदना एवं शिल्प के स्वरूप का अध्ययन” पर अभी तक कोई शोध कार्य नहीं हुआ है। मेरे शोध कार्य के पूर्व अमिता दुबे पर जो शोध कार्य किए गए हैं, उनकी सूची दी जा रही है, जिसके द्वारा यह निर्धारित होता है कि मेरे द्वारा किया गया शोध कार्य मौलिक एवं नवीन होगा।

1. लखनऊ की महिला साहित्यकार (पी-एच.डी)

   शोध छात्रा - सुश्री सुनीता

   शोध निर्देशक - डॉ. परशुराम पाल

   लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

2. डॉ. अमिता दुबे के साहित्य का समीक्षात्मक अनुशीलन (पी-एच.डी.)

   शोध छात्रा - सुश्री दिव्या सिंह

   शोध निर्देशक - डॉ. रमेश प्रताप सिंह

   ग्लोकल विश्वविद्यालय, मिर्जापुर, सहारनपुर

3. अमिता दुबे व्यक्तित्व एवं कृतित्व (लघु शोध प्रबंध एम.फिल.)

शोध छात्रा - सुश्री प्रियंका मिश्र

शोध निर्देशक - डॉ. परशुराम पाल

लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

4. डॉ. अमिता दुबे का कथा साहित्य : एक विवेचन (लघु शोध प्रबंध एम. फिल.)

शोध छात्र - गौरव कुमार

शोध निर्देशक - डॉ. बलजीत कुमार

बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ

5. डॉ. अमिता दुबे के कहानी संग्रह धनुक के रंग में मानवीय संवेदना (लघु शोध प्रबंध एम.ए.)

शोध छात्रा - सुश्री सौम्या मिश्रा

शोध निर्देशिका - डॉ. अंतिमा चौधरी

लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

6. डॉ. अमिता दुबे का काव्य संग्रह 'माँ हो जाना' भावगत एवं शिल्पगत विवेचना (लघु शोध प्रबंध एम.ए.)

शोध छात्रा - सुश्री शालिनी

शोध निर्देशक - डॉ. हेमांशु सेन

लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

7. डॉ. अमिता दुबे जी की कृति 'उलझन' उपन्यास समीक्षात्मक अध्ययन (लघु शोध प्रबंध एम. ए.)

शोध छात्रा - सुश्री शिल्पा रावत

शोध निर्देशक - डॉ. हेमांशु सेन

लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

**शोध की मौलिकता :**

हिन्दी साहित्य में कहानियों के प्रति प्रेम प्राचीन काल से ही रहा है। कहानी विधा में संवेदना एवं शिल्प पर अभी तक अनेक शोध कार्य हुए हैं किंतु प्रस्तावित शोध विषय "अमिता दुबे की कहानियों में व्यक्त संवेदना एवं शिल्प के स्वरूप का अध्ययन" विषय के सम्बन्ध में अभी तक कोई कार्य प्राप्त नही हुआ है। अतः प्रस्तावित शोध विषय नवीनता एवं भिन्नता लिए हुए मौलिक है।

**प्रस्तुत शोध की व्याप्ति :**

शोध विषय का अनुसंधान सुचारु रूप से सम्पन्न करने हेतु विषय का सुनियोजित होना अत्यंत आवश्यक है। शोध-कार्य की सुविधा की दृष्टि से मैंने अपने शोध विषय "अमिता दुबे की कहानियों में व्यक्त संवेदना एवं शिल्प

के स्वरूप का अध्ययन" को पाँच अध्यायों में विभक्त किया है|

**प्रस्तावित रूपरेखा**

**अमिता दुबे की कहानियों में व्यक्त संवेदना एवं शिल्प के स्वरूप का अध्ययन**

**1. प्रथम अध्याय - अमिता दुबे का व्यक्तित्व एवं साहित्यिक सर्वेक्षण**

**1.1. अमिता दुबे का व्यक्तित्व, परिवेश एवं कृतित्व**

1.1.1. व्यक्तित्व - जीवन परिचय, शिक्षा, कार्य-क्षेत्र, पुरस्कार आदि

1.1.2. परिवेश - सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक तथा साहित्यिक

1.1.3. अमिता दुबे के रचना संसार पर परिवेश का प्रभाव

**1.2. अमिता दुबे का कहानी साहित्य : एक सर्वेक्षण**

1.2.1. कहानी का सैद्धांतिक आधार

1.2.2. कृतित्व (कहानी साहित्य की कालक्रमानुसार विशेषताएँ)

## 2. द्वितीय अध्याय - अमिता दुबे क◌ी कहानियों में व्यक्त सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक संवेदना

### 2.1. सामाजिक संवेदना

2.1.1. रिश्तों में खोखलापन

2.1.2. लैंगिक विभेद

2.1.3. वेदना

2.1.4. दाम्पत्य जीवन की त्रासदी

2.1.5. दैनिक जीवन की समस्याएँ

2.1.6. प्रेम तथा संघर्ष

2.1.7. अन्य

### 2.2. राजनीतिक संवेदना

2.2.1. भ्रष्टाचार

2.2.2. अवसरवादी राजनीति

2.2.3. अपराधीकरण

2.2.4. अन्य

### 2.3. आर्थिक संवेदना

2.3.1. अर्थ का जीवन में महत्व

2.3.2. पूँजीपति वर्ग की मानसिकता

2.3.3. उपभोक्तावादी दृष्टिकोण

2.3.4. अन्य

**3. तृतीय अध्याय - अमिता दुबे की कहानियों में व्यक्त मनोवैज्ञानिक, स◌ा◌ंस्कृतिक एवं नैतिक संवेदना**

**3.1. मनोवैज्ञानिक संवेदना**

3.1.1. मानसिक यातना

3.1.2. मानसिक द्वंद्व एवं तनाव

3.1.3. एकाकीपन की त्रासदी

3.1.4. असंतोष की अभिव्यक्ति

3.1.5. अलगाव

3.1.6. कामवासना

3.1.7. अन्य

**3.2. सांस्कृतिक संवेदना**

3.2.1. पारंपरिक मान्यताएँ एवं रीति - रिवाज

3.2.2. सांस्कृतिक मूल्यों में गिरावट

3.2.3. सांस्कृतिक आघात

3.2.4. भारतीय एवं पाश्चात्य संस्कृति का द्वंद्व

3.2.5. अन्य

**3.3. नैतिक संवेदना**

3.3.1. परिवर्तित नैतिक मूल्य

3.3.2. टूटते नैतिक मूल्य

3.3.3. अनैतिक सम्बन्धों का चित्रण

3.3.4. अन्य

**4. चतुर्थ अध्याय - अमिता दुबे क◌ कहान◌ी साहित्य : चरित्र - चित्रण एवं भाषा - शैली**

4.1. चरित्र - चित्रण

4.2. भाषा

4.3. शैली

**5. पंचम अध्याय - प्रमुख समकालीन महिला कहानीकार और अमिता दुबे**

**उपसंहार**

**सन्दर्भ सूची**

**ग्रंथ सूची**

- आधार ग्रंथ
- सहायक ग्रंथ
- पत्र -पत्रिकाएं
- शब्दकोश

**आधार ग्रंथ**

1. पाषाणी, डॉ. अमिता दुबे, अविरल प्रकाशन, लखनऊ, 2006

2. नयन दीप, डॉ. अमिता दुबे, अविरल प्रकाशन, लखनऊ, 2006

3. सिलवटें, डॉ. अमिता दुबे, अविरल प्रकाशन, लखनऊ, 2010

4. पुनर्वास, डॉ. अमिता दुबे, साहित्य भंडार 50, चाहचंद, इलाहबाद, 2014

5. सुखमनी, डॉ. अमिता दुबे, राजेश प्रकाशन, दिल्ली, 2017

6. सीढ़ी, डॉ. अमिता दुबे, विभा प्रकाशन, इलाहाबाद, 2018

7. धनुक के रंग, डॉ. अमिता दुबे, नमन प्रकाशन, लखनऊ, 2020

8. सम्भावना के जुगनू, डॉ. अमिता दुबे, के.एल. पचौरी प्रकाशन, गाजियाबाद, 2021

**सहायक ग्रंथ**

1. सांप्रदायिकता के स्रोत, अभय कुमार दुबे, विनय प्रकाशन, दिल्ली, 1993

2. अज्ञेय कहानी संचयन, गीतांजलि श्री, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2022

3. हिंदी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली, डॉ. अमरनाथ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2012

4. भारतीय जीवन मूल्य, डॉ. सुरेन्द्र वर्मा, पार्श्वनाथ विद्यापीठ वाराणसी, 1996

5. हिंदी महिला साहित्यकारों के उपन्यासों में नारी, दिलीप मेहरा, विमर्श क्लासिक पब्लिशिंग, नई दिल्ली, 2012

6. अन्तिम दशक की हिन्दी कहानियां 'संवेदना और शिल्प', डॉ. नीरज शर्मा, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2011

7. कहानी की संवेदनशीलता सिद्धान्त और प्रयोग, भगवान दास वर्मा, ग्रन्थम् प्रकाशन, कानपुर 1972

8. अंधेर नगरी, संवेदना और शिल्प, सिद्धनाथ कुमार, अनुपम प्रकाशन, पटना, 1993

9. आधुनिक हिन्दी कहानी:साहित्य में काममूलक संवेदना, श्री रामवी महाजन, चिन्तन प्रकाशन, कानपुर, 2007

10. हिन्दी कहानी की शिल्पविधि का विकास, श्री लक्ष्मीनारायण लाल, साहित्य भवन प्रा. लि., इलाहाबाद, 1967

11. आठवें दशक के बाद हिन्दी कथा साहित्य, डॉ. राहुल, ग्रंथकेतन, दिल्ली, 2009

12. समकालीन हिन्दी साहित्य में नारी संवेदना, डॉ. दयानंद सालुके, विनय प्रकाशन, कानपुर, 2017

13. कहानी : स्वरूप और संवेदना, राजेन्द्र यादव, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1988

14. निराला साहित्य में जीवन दर्शन, डॉ. विनोदिनी श्रीवास्तव, सुलभ प्रकाशन, लखनऊ, 1998

15. नई सदी का कथा समय, पंकज सुबीर , शिवना प्रकाशन, सीहोर, 2015

16. समकालीन कहानी युगबोध का संदर्भ, डॉ. पुष्पपाल सिंह, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1986

17. समकालीन स्त्री विमर्श, क्षमा शर्मा, समसामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010

18. समकालीन हिन्दी कहानी, डॉ. पुष्पपाल सिंह, हरियाणा साहित्य अकादमी, चंडीगढ़, 1987

19. हिन्दी कहानी कला, डॉ. प्रतापनारायण टंडन, हिन्दी समिति, लखनऊ, 1970

20. मधुमति, डॉ. धर्मपाल मैनी, डायमण्ड बुक्स प्रकाशन, नई दिल्ली, 1988

21. आदर्श हिन्दी व्याकरण एवं रचना, रवि शर्मा, आधुनिक पुस्तक उद्योग, नई दिल्ली, 1992

**पत्र - पत्रिकाएं**

अनुसंधान

नूतन वाग्धारा

हंस

अभिव्यक्ति

साहित्य कुंज

गवेषणा

नव निकष

साहित्य जगत

**शब्दकोश**

1. मानविकी पारिभाषिक कोश : साहित्य खंड, डॉ. नगेन्द्र, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1969

2. संस्कृत हिन्दी कोश, वामन शिवराम आप्टे, मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन, दिल्ली, 1969

3. हिन्दी पर्यायवाची कोश, डॉ. भोलानाथ तिवारी, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 1994

4. हिन्दी विश्वकोश (भाग 21), नगेन्द्रनाथ बशु, बी. आर. पब्लिशिंग कॉरपोरेशन, दिल्ली, 1919